माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भग्नाशा एवं समायोजन के संयुक्त तथा सापेक्षिक योगदान का अध्ययन

डॉ0 प्रेम पाल सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग,
एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ0प्र0

सारांश

शिक्षा वो अनमोल रत्न है जिसके माध्यम से व्यक्ति का समुचित विकास होता है शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है, जिससे जीवन प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। भग्नाशा और समायोजन शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक रुप में प्रभाव डालते हैं। माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भग्नाशा एवं समायोजन के संयुक्त तथा सापेक्षिक योगदान के अध्ययन हेतु न्यायदर्श के रुप में उत्तर प्रदेश के जनपद बरेली के नगर क्षेत्र बरेली में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 में अध्ययनरत 941 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। आँकड़ों के संकलन हेतु दीक्षित एवं श्रीवास्तव (1997) द्वारा निर्मित भग्नाशा प्रतिक्रिया मापनी और सिन्हा एवं सिंह (2007) द्वारा निर्मित विद्यालयी बालकों की समायोजन अनुसूची (AISS) का प्रयोग किया गया है। सामाजिक विज्ञान में शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण शोधकर्ता ने स्वयं निर्मित किया है। सामाजिक विज्ञान उपलब्धि का भग्नाशा तथा समायोजन के आधार पर पूर्वानुमान लगाने हेतु कार्य पदवार प्रतिगमन विश्लेषण द्वारा सम्पन्न किया गया है। आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण एवं विवेचन के पश्चात् यह पाया गया कि सामाजिक विज्ञान के कुल उपलब्धि के पूर्वानुमान लगाने में समायोजन तथा भग्नाशा की सार्थक भूमिका है।

प्रस्तावना :

शिक्षा वो अनमोल रत्न है जिसके माध्यम से व्यक्ति का समुचित विकास होता है। शिक्षा जीवन भर चलने वाली वो प्रक्रिया है जिससे जीवन प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहता है। **रोजेनविंग (1944)** के अनुसार जब व्यक्ति की जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं की संतुष्टि में कुछ या अनेक बाधायें ऐसी उत्पन्न होती हैं जो अविजित होती हैं तब भग्नाशा उत्पन्न होती है, यदि भग्नाशा है तो शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होने लगती है। **स्टैगनर (1961)** के अनुसार भग्नाशा संवेगात्मक प्रतिफल की वह अवस्था है जिसकी मुख्य विशेषता क्लेश और क्रोध है। लक्ष्य प्राप्ति व्यवहार में अवरोध के कारण भग्नाशा उत्पन्न होती है। **डोलार्ड (1939)** के अनुसार, भग्नाशा एक ऐसी स्थिति है जो निर्णित लक्ष्यों के न प्राप्त होने पर पैदा होती है। हमारे जीवन की महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं में से समायोजन एक आधारभूत संकल्पना है जिसके आधार पर समाज के विभिनन वर्गों में हमारा आचार–व्यवहार व उनसे प्रतिक्रियाओं का निर्धारण होता है। व्यक्ति को अपने जीवन में किसी ना किसी स्तर पर समायोजन करना पड़ता है, यदि समायोजन व्यक्ति नहीं कर पाता है तो उसकी मानसिक अवस्था प्रभावित हेने लगती है। **स्मिथ (1968)** के अनुसार, अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ है, यह कुण्ठाओं, दुश्चिन्ताओं को जहाँ तक सम्भव है, कम करता है। **कुप्पुस्वामी (1986)** ने भी कहा है कि समायोजन के फलस्वरुप प्रसन्नता होती है क्योंकि इससे संवेगात्मक द्वन्द्व और तनाव दूर हो जाते है। **स्किनर (2004)** के अनुसर शैक्षिक कार्य प्रक्रिया का अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों के बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है। **वर्मा (1968)** ने भग्नाशा एवं कुसमायोजित किशोर विद्यालयी छात्रों पर अध्ययन किया और अध्ययन में पाया कि असफल छात्रों का मुख्य कारण मानसिक चिन्तायें और भग्नाशायें थीं। **पाठक (1971)** ने अपना अनुसंधान बालकों के विद्यालयी समायोजन के स्तर और सामाजिक स्थिति पर किया। अध्ययन के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि चर्चित किशोर अन्य किशोंरों से गृह, सामाजिक संवेगात्मक और विद्यालयी समायोजन में उत्कृष्ट थे। अध्ययन में यह भी पाया गया कि सामाजिक स्तर का भी सभी क्षेत्रों के समायोजन के साथ सार्थक सम्बन्ध था। **देसाई (1979)** ने अपना अध्ययन उच्च बौद्धिक क्षमता और प्रतिभाशाली बालकों पर किया और अपने अध्ययन में पाया कि उनकी शैक्षिक अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव सकारात्मक और सार्थक था। उपरोक्त शोध अध्ययनों में ऐसा कोई भी अध्ययन नहीं

हुआ जो माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भग्नाशा एवं समायोजन के संयुक्त तथा सापेक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया हो। अतः यह अध्ययन इस अभाव की पूर्ति करेगा।

अध्ययन का उद्देश्य :

''माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भग्नाशा एवं समायोजन के संयुक्त तथा सापेक्षिक योगदान का अध्ययन''।

अध्ययन की परिकल्पना :

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भग्नाशा एवं समायोजन के संयुक्त तथा सापेक्षिक योगदान सार्थक नहीं है।

अध्ययन विधि :

इस अध्ययन में शोध की वर्णनात्मक विधि को अपनाया गया है। अध्ययन हेतु न्यायदर्श के रुप में उ0प्र0 के जनपद बरेली के नगर क्षेत्र बरेली में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 में अध्ययनरत 941 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

आंकड़ों के संकलन हेतु **दीक्षित एवं श्रीवास्तव (1997)** द्वारा निर्मित भग्नाशा प्रतिक्रिया मापनी और सिन्हा एवं सिंह (2007) द्वारा निर्मित विद्यालयी बालकों की समायोजन अनुसूची (AISS) का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने सामाजिक विज्ञान में शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण स्वयं तैयार किया है। सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण में कठिनाई स्तर 0.4–0.6 के मध्य और विभेदीकरण क्षमता 0.3 से अधिक वाले प्रश्नों को ही चयन किया है। अध्ययन का एक उद्देश्य सामाजिक विज्ञान उपलब्धि का भग्नाशा तथा समायोजन के आधार पर पूर्वानुमान लगाना था, यह कार्य पदवार प्रतिगमन विश्लेषण द्वारा सम्पन्न किया गया है [कूले और लोहनस, (1971), करलिंगर और पीधाजर, (1973)] पदवार प्रतिगमन विश्लेषण का एक तरीका यह होता है कि यह उस पूर्वानुमान चर से प्रारम्भ करता है, जिसका कसौटी चर के साथ सर्वाधिक सहसम्बन्ध हो, फिर आने वाल पदों में यह बाकी पूर्वानुमान लगाने वाले चरों में से एक–एक को जोड़ता चला जाता है और यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि प्रसरण में सार्थक रुप से योगदान देना ना बन्द हो जाय। विश्लेषण के परिणाम को तालिका संख्या 01 में दर्शाया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण, विवेचन एवं निष्कर्ष :–

तालिका संख्या 01 : माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भग्नाशा एवं समायोजन के संयुक्त तथा सापेक्षिक योगदान सम्बन्धी विश्लेषण को प्रदर्शित करती तालिका

चर	b – भरांक	संचयी R	सार्थकता स्तर
समायोजन	-0.232	0.230	0.01
भग्नाशा	0-063	0.239	0.05

नियतमान = 45.105

उपरोक्त तालिका सं0–01 दर्शाती है कि संचयी बहुचर सहसम्बनध 0.239 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। यह दर्शाता है कि सामाजिक विज्ञान उपलब्धि के कुल प्रसरण में से 5.7% प्रसरण की व्याख्या समायोजन एवं भग्नाशा के द्वारा हो रही है। इन दोनों में से भी देखा जाय तो समायेाजन के द्वारा 5.3% प्रसरण की व्याख्या हो रही है जब भग्नाशा का योगदान 0.4% है। तालिका सं0–01 के आधार पर सामाजिक विज्ञान उपलब्धि के पूर्वानुमान हेतु समीकरण को मूल प्राप्तांक (Raw Score) के रुप में निम्न प्रकार से लिखा जा सकता है–

$$y' = 45.105 - 0.23_2 Adj. + 0.06_3 Frus.$$

जहाँ,

y' = पूर्वानुमानित सामाजिक विज्ञान उपलब्धि प्राप्तांक

$Adj.$ = समायोजन के मूल प्राप्तांकों का योग

$Frus.$ = भग्नाशा के मूल प्राप्तांको का योग

नियतमान = 45.105

उपरोक्त समीकरण यह दर्शाता है कि सामाजिक विज्ञान उपलब्धि का पूर्वानुमान लगाने के लिए समायोजन तथा भग्नाशा के मूल प्राप्तांक को उसके साथ दिये गये भारांक से गुणा करके चिन्ह (+ या−) का ध्यान रखते हुए नियतमान को जोड़ देना होगा। निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान के कुल उपलब्धि के पूर्वानुमान लगाने में समायोजन तथा भग्नाशा की सार्थक भूमिका है। अतः प्रस्तुत परिणाम के आधार पर अध्ययन की परिकल्पना–माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भग्नाशा एवं समायोजन के संयुक्त तथा सापेक्षिक योगदान सार्थक नहीं है–अस्वीकृत की जाती है।

संदर्भ :

1. Rosenzweig, S. (1944). An out line of frustration theory. In J. McV Hunt (ed.), *Personality and the behaviour disorders, vol. 1,* New York : Ronald Press, ch.2.
2. Stagner, R. (1961) *: Psychology of Personality* (IIIrd Fd.). New york : Mc Grawl Hill.
3. Dollard, J. Doob, L.W., and Millar, N.E. (1939). *Frustration and Aggression.* New Heaven : yale university Press.
4. Smith, H.C. (1968) : *Personality Development,* New york : Mc. Grawl Hill.
5. Kappuwamy (1986) : *Advanced Educational Psychology,* New Delhi Sterling Publisher Pvt. Ltd.
6. Skinnor, C.E. (2004) : *Educational Psychology* (IVth Edition). New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd.
7. Verma, V. (1968) Frustration and Mala adjustument of retarted adolescent school students. Unpublished Ph.D. thesis (edu.) Lucknow University of Lucknow.
8. Pathak, R.D. (1971). Sociometric status and adjustment level in school children Unpublished. Ph.D. Thesis (Psy). Sagar University.
9. Desai, S.D. (1979) A study of class room ethos pupils motivation and academic achievement. Unpublished Ph.D. thesis (Edu.) M.S. University, Barado.
10. Dixit, B.M. and Srivastav, D.N. (1997). *Manual for Reactions to frustration Scale* (RFS) Agra : National Psychological corporation.
11. Sinha, A.K.P. and Singh, R.P. (2007) : Manual for Adjustment Inventory for School Students (AISS). Agra. National Psychological Corporation.
12. Cooley, W.W. and Lohnes, P.R. (1971) *Multivariate data analysis, Newyork* : wiley.
13. Kerlinger, F.N. and Pedhazur, E.J. (1973) *Multiple Regression Analysis in Behavioural Research.* Newyork : Holt, Rinehart and winston.

Nav Jyoti, Vol. 5, No. 11, July-December 2017 ISSN : 2249-7331

अंग्रेजी राज की स्थापना से पूर्व भारतीय गाँव, नगर तथा कस्बे

डॉ0 राजेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर

मुगल सम्राज्य के अन्तिम महान शासक औरंगजेब के अयोग्य उत्तराधिकारियों के काल में भारत राजनीतिक दृष्टि से संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। किन्तु आर्थिक रूप से वह समृद्ध एवं सम्पन्न था। अग्रेजी सत्ता की संस्थापन के पूर्व भारत में आत्म निर्भर ग्राम समाज व्यवस्था थी। अट्ठारहवी शताब्दी तक भारत की आर्थिक दशा उन्नत थी तथा भारत की उत्पादन विधियॉ तथा उसके व्यापारिक और औद्योगिक संगठन विश्व के किसी भी अन्य देश की श्रेणी में रखे जा सकते थे।

भारतीय समाज की आत्म निर्भरता उसके सम्बद्ध नगरों और कस्बो पर निर्भर करती थी मध्यकाल से ही भारतीय नगर तथा कस्बे उधोग एवं व्यापार के केन्द्र होने के कारण समृद्ध थे। महान मुगल बादशाह अकबर के समय भारत में 120 नगर तथा 3200 कस्बे थे, जो भारत की सम्पदा की वृद्धि के श्रोत एवं प्राण थे। इन नगरो में दिल्ली, आगरा, काशी, चुनार, पटना, बरार, अहमदनगर, कर्नाटक, फतेहपुर सीकरी, यहा, राजस्थान, जौनपुर, अलबर, जयपुर, बरहानपुर, मुर्शिदाबाद, कानपुर, कश्मीर, मुल्तान और खान देश के नाम लिये जा सकते है इनमें से कोई भी नगर यूरोप के किसी भी नगर से समृद्धि और सम्पन्नता की दृष्टि से कम महत्वपूर्ण नही था। आगरा की तुलना लन्दन से की जा सकती थी जिसकी आबादी लगभग पॉच छः लाख की थी। दिल्ली पेरिस के समान था अहमदाबाद की तुलना लन्दन से की जा सकती थी यद्यपि स्वतंत्र औद्यौगिक और व्यापारिक संस्थानों के अभाव के कारण इन नगरों तथा कस्बों का विकास यूरोप के नगरों की तरह नही हो सका और इसके अतिरिक्त युद्धो और कतिपय आपदावों के कारण आगरा, दिल्ली और लाहौर जैसे नगरों की स्थिति में गिरावट आ गयी फिर भी इन नगरों के व्यापारी और सौदागर इनकी समृद्धि को बरकरार रखने में सफल रहे क्योकि कुशल एवं प्रवीण कलाकारो के दस्तकारी से इन व्यापारियों का विदेशो से व्यापार चलता रहा जिसके लिए उत्तरदायी नगरों की समृद्धि और सम्पन्नता थी।

यथार्थ रूप में भारत नगरों, कस्बों और गॉवों में रहता था जिसमें रहने वाले लोग विशिष्ट वस्तुवों के उत्पादन के लिये विशिष्ट वर्ग होते थे जो उत्तम प्रकार के वस्तुवो का निर्माण करते थे शिल्पकारों तथा कारीगरों के विशिष्ट समूह उत्पादन के विशिष्ट अंगो का कार्यभार सॅभालते थे और वस्तु विशेषज्ञ मिलकर विक्री योग्य वस्तुये तैयार करते थे। उदाहरण के रूप में रूई धुनने वालों के विशिष्ट स्वतंत्र समूह थे, कातने वाले, बुनने वाले, रंगनेवालो के भी अलग–अलग सामान का उत्पादन करने वाले शिल्पकार या कारीगरों का अपना अलग–अलग समाज था जिसमें सुनार, जौहरी, लुहार, कुम्भकार आदि एक प्रकार के कारीगर अपनी–अपनी बस्तियों में निवास करते थे।

भारतीय गॉव सामाजिक संरचना के प्रमुख अंग थे। कम्पनी राज की स्थापना के पूर्व के आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर थे। ग्रामीणों की छोटी बड़ी आवश्यकता की वस्तुऍ गॉवों के अन्दर ही ग्रामीणों द्वारा उपजाये गये अनाजों और गॉवों द्वारा निर्मित वस्तुवों से हो जाती थी तथा कुछ वस्तुवों के अनुपलब्धता होने पर वे पास के गॉवों से उसकी आपूर्ति कर लेते थे अगर पास के गॉवो में भी कोई वस्तु नही मिल पाती थी तो वह गॉवों में लगने वाले साप्ताहिक हाटों से प्राप्त कर ली जाती थी यदि कोई वस्तु साप्ताहिक हाटों से भी नही मिलती थी तो उसे वार्षिक मेलों से ले लिया जाता था, मिट्टी के भाड़, सोने, चॉदी के आभूषण, लकड़ी के सामान, चमड़े की बनी वस्तुयें, तेल, मुर्तियॉ आदि गॉवों में ही तैयार कर ली जाती थी एलफिन्सटन के अनुसार भारतीय ग्राम छोटे–छोटे गणराज्य की तरह थे जो अपनी

आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु स्वयं पैदा कर लेते थे इसके लिये उन्हे कच्चा माल पास के गॉवों में मिल जाता था जैसे गॉवों के अपने ही क्षेत्र में उगे जंगल की लकड़ी का औजारो तथा मकान बनाने के लिये इस्तेमाल किया जा सकता था रूई देश के विभिन्न भागों से प्राप्त किया जा सकता था इन वस्तुओं के द्वारा उत्पादित वस्तुओं की खपत, अधिकाशतः गॉवों में ही हो जाती थी जो सामान बच जाता था उसे साप्ताहिक मेलों में बेचकर भू–राजस्व दे देना पड़ता था उनके पास अकाल या दैवीय आपदाओं की स्थिति में अन्नाभाव इत्यादि का सामना करना पड़ता था अतः गॉव में लोग धन संग्रह नही कर सके क्योंकि वे आत्म निर्भर होते हुये भी पूंजी के अभाव में थे इसके अतिरिक्त ग्रामीणे में जातिगत बन्धनों की सुढ़ढ़ता प्राप्त थी और उनका व्यापार वाणिज्य नगण्य था यहॉ तक गॉव के कुलीन की मृत्यु होने पर उसकी सम्पत्ति उसके उत्तराधिकारी को न मिलकर उस पर राज्य का अधिकार हो जाता था ऐसी स्थिति में गॉवों में धनी वर्ग पैदा नही हो सका।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को साहूकार या महाजन भी समय–समय पर ग्रामीणों को कर्ज के रूप में धन देकर उनकी समस्याओं को दूर किया करते थे किन्तु इसके बदले में वे महाजन उनसे अधिक लाभ उठाते थे वे किसानों का भरपूर शोषण करते थे और कर्ज नही वापस कर पाने की स्थिति में उनकी जमीनें भी हड़प लेते थे फिर भी गॉव स्वावलंबी थे अतः ग्रामीण समाज आर्थिक दृष्टि से स्थिरता का प्रतीक था और आर्थिक स्थिरता कृषि, उद्योग और व्यापार की संतुलित प्रणाली पर आधारित थे मॉग और पूर्ति के नियम प्राकृतिक रूप से चलते थे और कहा जा सकता है कि आमतौर पर खुशहाली थी सर चार्ल्स मेटकाफ न आत्म निर्भर ग्राम समाज की विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया है'' आदिम हल और बैल से खेती और साधारण औजार की मदद से दस्तकारी की निति पर टिका आत्मनिर्भर गॉव अग्रेजो के आने से पूर्व भारतीय जीवन की मूल आर्थिक इकाई थे इनमें न्यूनाधिक परिशोधन हुये थे किन्तु राजनतिक हलचल, धार्मिक उथल पुथल और विनाशकारी युद्धों के बावजूदअंग्रेजो के आगमन से पहले तक गॉवो की चिंतन प्रकृति लगभग क्षीण रही। विदेशी आक्रमण हुये राजवश बदले आपसी लड़ाइयो के बाद विभिन्न राज्यों के भू–भागी का बटवारा हुआ नये राज्य बने बिगड़े लेकिन आर्थिक इकाई के रूप में गॉवो की हैसियत ज्यों की त्यों रही राज्य लुढ़कते रहे, क्रातियॉ होती रही हिन्दू, पठान, मुगल, मराठा, सिक्ख अंग्रेज क्रमशः मौलिक बने लेकिन ग्राम समुदाय पूर्ववत बने रहे।

अग्रेजों के आने से पूर्व भारतीय कारीगर और शिल्पकार विश्व प्रसिद्ध थे ताराचन्द के शब्दो में अपनी कारीगरी की प्रवीणता की दृष्टि से भारत के कारीगरों ने उसे समय के संसार में अपना अद्वितीय स्थान बना लिया था। पश्चिम के कारीगर भारतीय कारीगरों की तरह प्रवीण नही थे इतना ही नही उद्योग विषयक संगठन और प्रविधियों की दृष्टि से भी भारत यूरोप के देशों से बहुत चढ़ा–बढ़ा था।

भारत के नगरों और गॉवो में वस्तुओ का इतना अधिक उत्पादन होता था कि उनसे न केवल भारत के लोगों की आवश्यकता की वस्तुओं की पूर्ती हो जाती थी अपितु एशियाइ तथा यूरोपिय सौदागर भी अनका व्यहार करते थे भारतीय वणिक इन उत्पादित वस्तुओ को भारत से जहाजों पर लादकर थल तथा जल मार्गो से यूरोप तथा विश्व के अन्य देशों में ले जाते थे और भारत की समृद्धि में दिन दूनी रात चौगनी वृद्धि करते थे।

भारतीय व्यापारी, भारतीय वस्तुओं के साथ इरान की खाड़ी तक जाते थे लाल सागर के सारे बन्दरगाहों में उनके जहाज चक्कर काटते रहते थे वे कंधार, काबुल, बलख, बुखारा, काशगर आदि में अफगनिस्तान और मध्य एशिया में इरान में शीराज इस्फहान रे तथा मेशेद में और रूस में बाकू अस्ताखान, निजनी नोवगोरदो आदि पर्याप्त संख्या में विद्यमान थे।

रूस के उदारवादी विचार धारा के शासक पीटर महान के कथनानुसार भारत का वाणिज्य विश्व का वाणिज्य है और जो व्यक्ति एकान्ततः उसका नियंत्रण कर सकता है, वही यूरोप का तानाशाह है। पूर्वी एशिया के वर्मा, मलाया, इण्डोनेशिया, चीन, जापान आदि देशों की मण्डियॉ भारत उत्पादित एवं

निर्मित वस्तुओं से भरी रहती थी। बंगाल तथा कोरोमण्डल तट के नगरों में बने सामान एशियाइ देशों में कारीगर रहते थे और जहॉ के उत्पादित सामानों को व्यापारी एशिया तथा यूरोप के देशों मे ले जाकर व्यापार करके अकूत धन का अर्जन करते थे।

सन्दर्भः–

वेरा अनेस्टे, दइकॉनामिक डेवलेपमेंट आफ इण्डिया, तृतीय संस्करण पृ0–05
विपन चन्द भारत का आर्थिक राष्ट्रवाद का उद्‌भव और विकास संस्करण पृ0–51
ताराचन्द, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास पहला खण्ड, द्वितीय खण्ड पृ0–162
पी0ए0 वाडिया, तथा के0टी0 मर्चेन्ट, आनर इकानामिक प्राण्लम पृ0–03
चार्ल्स मेटकाफ, जी0 एस0 घुर्ये–कास्ट एण्ड रेस इन इण्डिया पर उद्वत पृ0–24
ताराचन्द, पहला खण्ड पृ0–163
हैमिल्टन, प्राण्लम आफ द मिडिल इस्ट पृ0–62